



॥ होली की कथा – भक्त प्रह्लाद और
होलिका ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ होली की कथा – भक्त प्रह्लाद और होलिका ॥

होली का पर्व मुख्य रूप से भक्त प्रह्लाद, भगवान विष्णु और होलिका की पौराणिक कथा से जुड़ा माना जाता है। यह कथा भक्ति की शक्ति और बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश देती है।

बहुत समय पहले हिरण्यकशिपु नाम का एक अत्यंत शक्तिशाली असुर राजा था। उसने कठोर तपस्या करके भगवान ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया था। वरदान के कारण उसे अपने बल और शक्ति पर बहुत अहंकार हो गया। वह स्वयं को भगवान मानने लगा और अपनी प्रजा को भी उसकी पूजा करने के लिए बाध्य करता था।

लेकिन हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का परम भक्त था। वह हर समय भगवान विष्णु का नाम जपता और उनकी भक्ति करता था। हिरण्यकशिपु को अपने पुत्र की विष्णु भक्ति बिल्कुल पसंद नहीं थी। उसने प्रह्लाद को समझाने और डराने का बहुत प्रयास किया, लेकिन प्रह्लाद अपनी भक्ति से विचलित नहीं हुआ।

हिरण्यकशिपु ने क्रोधित होकर प्रह्लाद को कई प्रकार से दंड देने का प्रयास किया। कभी उसे ऊँचाई से गिराया गया, कभी विष दिया गया और कभी हाथियों से कुचलवाने का प्रयास किया गया, लेकिन भगवान विष्णु की कृपा से प्रह्लाद हर बार सुरक्षित रहा।

अंत में हिरण्यकशिपु ने अपनी बहन होलिका की सहायता लेने का निर्णय किया। होलिका को ऐसा वरदान प्राप्त था कि अग्नि उसे जला नहीं सकती थी। वह प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर अग्नि में बैठ गई, ताकि प्रह्लाद जल जाए।

लेकिन भगवान विष्णु की भक्ति में लीन प्रह्लाद का अग्नि भी कुछ नहीं बिगाड़ सकी। प्रह्लाद सुरक्षित बच गया, जबकि होलिका अग्नि में जल गई। इसी घटना की स्मृति में होलिका दहन की परंपरा मानी जाती है। इसके अगले दिन रंगों के साथ होली या धुलंडी का उत्सव मनाया जाता है।